इकाई 3 कथासरित्सागर, पंचतन्त्र, हितोपदेश, चाणक्यनीति

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 कथासरित्सागर, पञ्चतन्त्र, हितोपदेश, चाणक्यनीति

3.3 कथासरित्सागर

- 3.3.1 भूमिका
- 3.3.2 समय
- 3.3.3 कथा-सार

3.4 पञ्चतन्त्र

- 3.4.1 भूमिका
- 3.4.2 समय
- 3.4.3 वाचनाएँ
- 3.4.4 कथा-सार

3.5 हितोपदेश

- 3.5.1 भूमिका
- 3.5.2 समय
- 3.5.3 कथासार

3.6 चाणक्यनीति

- 3.6.1 भूमिका
- 3.6.2 समय
- 3.6.3 वाचनाएँ
- 3.6.4 कथासार

3.7 सारांश

3.8 शब्दावली

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.10 बोध अभ्यास उत्तर

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

3.0 उद्देश्य

- इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्र कथा एवं नीति साहित्य से परिचित हो सकेंगे।
- संस्कृत कथा एवं नीति साहित्य के इतिहास को जान पाएँगे।
- संस्कृत कथा एवं नीति साहित्य के प्रमुख कथाकारों का जीवन परिचय एवं विधा से परिचित होंगे।
- कथा एवं नीति साहित्य को समझ एवं उसकी लेखनशैली से परिचित होंगे।
- इनको पढ़ने के उपरान्त अन्य ग्रन्थों को स्वयं पढ़ एवं समझ सकेंगे एवं नीतिपरक ज्ञान को जीवन में प्रयोग कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

इस इकाई में कथा-साहित्य के प्रमुख ग्रन्थों का परिचय, कालखण्ड एवं विषयवस्तु का वर्णन किया गया है। कथासाहित्य का मानव जीवन से अभिन्न सम्बन्ध है। इसके माध्यम से मानव को नीतिपरक शिक्षा भी प्रदान की जाती है। कथा-साहित्य का सम्बन्ध काव्य-नाटक, इतिहास-पुराण आदि साहित्य से प्राचीन है। मानव ने जब से विचारों के आदान-प्रदान करने की क्षमता प्राप्त की, तब से वे मनोरञ्जन, शिक्षा-प्राप्ति के लिए इस साहित्य का उपयोग किया है। छोटे बच्चों को कथा सुनने में अत्यधिक रुचि होती है इसलिए इस माध्यम को शिक्षा प्रदान का साधन बनाया गया। कथा-साहित्य की दृष्टि से भारत संसार में अग्रणी है। प्राचीन भारत में पञ्चतन्त्र, हितोपदेश की कहानियाँ तथा चाणक्यनीति के नीतिपरक शब्द इतनी प्रौढ़ इतनी मनोहर, शिक्षाप्रद है तथा इनकी शैली इतनी रोचक एवं आकर्षक है कि विश्व-साहित्य पर इसका साक्षात् प्रभाव पड़ा।

3.3 कथासरित्सागर

3.3.1 भूमिका

बृहत्कथा तथा पञ्चतन्त्र भारतीय कथा-साहित्य के दो आधार स्तम्भ हैं जिसमें गुणाढ्यरचित बृहत्कथा पैशाची एवं पञ्चतन्त्र संस्कृत में

निबद्ध है। लोककथाओं का प्राचीनतम संग्रह बृहत्कथा में किया गया है। पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार इसका रचना काल प्रथम या द्वितीय शताब्दी है। गुणाढ्य सातवाहन राज्य के दरबार से सम्बद्ध थे। कथासरित्सागर के एक संस्कृत संस्करण में एक घटना का उल्लेख किया गया है जिसमें गुणाढ्य को राजसभा में संस्कृत भाषा सिखाने की एक शर्त हार जाने के कारण संस्कृत बोलना छोड़ना पड़ा था बाद में वे विन्ध्यावटी में पशु-पक्षियों को पैशाची में कथा सुनाने लगे। इस समय बृहत्कथा उपलब्ध नहीं है।

बृहत्कथा की तीन वाचनाएँ (Recensions) प्राप्त होती है - नेपाली वाचना, प्राकृत वाचना एवं कश्मीरी वाचना।

क) **नेपाली वाचना** - बुधस्वामी रचित 'बृहत्कथाश्लोकसंग्रह' बृहत्कथा की नेपाली वाचना है। इसमें 28 सर्ग एवं 4539 श्लोक हैं।

ख) **प्राकृत वाचना** - संघदासगणि द्वारा रचित वसुदेवहिण्डी प्राकृत वाचना है। इसमें कृष्ण के पिता वसुदेव की 29 विवाहों की कथा 29 लम्भकों में रची गई है। इसमें छः प्रकरण हैं। इसका एक दूसरा खण्ड मध्यम खण्ड के नाम से प्रसिद्ध है जिसमें 71 विवाहों का वर्णन है।

ग) **कश्मीरी वाचना** - कश्मीरी के दो कवि क्षेमेन्द्र एवं सोमदेव ने बृहत्कथा का संस्कृत में अनुवाद किया। यही कश्मीरी वाचना के नाम से प्रसिद्ध है। क्षेमेन्द्र द्वारा बृहत्कथामंजरी बृहत्कथा का अनुवाद है इसमें 18 लम्बक (अध्याय) हैं एवं 7500 श्लोक हैं। सोमदेव द्वारा बृहत्कथा का जो अनुवाद किया गया वह कथासरित्सागर है।

3.3.2 समय

बृहत्कथा की अर्वाचीन एवं विशालतम संस्कृत संस्करण कथासरित्सागर है। इसकी रचना कश्मीरी पण्डित सोमदेव ने कश्मीर नरेश अनन्त की पत्नी सूर्यवती के मनोरञ्जनार्थ की थी। 1063 ई. से 1082 ई. की बीच इसकी रचना की गई थी।

3.3.3 कथासार

कथासरित्सागर 18 लम्भकों में विभाजित है। पुनः सोमदेव ने लम्भकों को 124 तरंगों में विभाजित किया है। इस ग्रन्थ में 21388 श्लोक है। इस कथा संग्रह के 761 श्लोक बड़े छन्दों में एवं शेष श्लोक सरस प्रवाहपूर्ण भाषा शैली के प्रतिनिधि अनुष्टुप् छन्द में हैं। उदयन एवं उसकी रानियों की कहानियाँ नरवाहनदत्त का परिचय, पञ्चतन्त्र में उद्धृत कुछ कहानियाँ कथासरित्सागर के मूल कथानक हैं। सोमदेव ने ग्रन्थ के आरम्भ में ही यह स्वीकार किया है कि वे बृहत्कथा की कथा को यथावत प्रस्तुत करने की प्रतिज्ञा की है। उन्होंने कहा है कि जैसी मूल कथा है वैसा ही मैंने ग्रन्थ रचा है। केवल औचित्य एवं कथा के मध्य तारतम्य बैठाने के लिए थोड़ी कथा में हेर-फेर किया है। इसमें जीव-जन्तुओं की कथाएँ, आकाश एवं पृथ्वी के निर्माण सम्बन्धी ऋग्वैदिक कथाएँ, रक्तपान करने वाले वेताल की कहानियाँ यहाँ उपनिबद्ध हैं। सोमदेव ने अपने ग्रन्थ में भारतीय समाज का सजीव चित्रण किया है। चोर, जुआरी, धूर्त्त, कपटी, ठग, चोर-उच्चके, ढोंगी, वेश्यागामी पुरुषों का चित्रण किया है जो समाज के काले छुपे हुए रूप का वर्णन है। समाज के धवलरूप महावीर, प्रतिव्रताओं की कथा, चतुर लोगों की कथा भी सोमदेव ने वर्णित की है।

कथाओं की विविधता और समाज के प्रत्येक वर्ग के प्रतिनिधित्व के कारण कथासरित्सागर भारतीय संस्कृति का आधार ग्रन्थ बन जाता है। अन्धविश्वास, जादूगरी, शैवमत, बौद्धमत, कर्मवाद, मातृपूजा आदि का भी चित्रण इस ग्रन्थ में किया गया है। सोमदेव की शैली प्रवाहपूर्ण, रसप्रधान एवं प्रसादगुण सम्पन्न है।

विद्येव कन्यका मोहादपात्रे प्रतिपादिता। यशसे न न धर्माय जायेतानुशयाय तु अर्थात् अज्ञानवश कुपात्र को दी गई विद्या के समान ही कुपात्र की दी गई कन्या न कीर्त्ति के लिए होती है और न धर्म के लिए अपितु वह पश्चाताप के लिए होती है। सोमदेव ने स्त्रियों के चरित्र विषय रचना में विशेष रूचि दिखाई है। उस युग में स्त्रियों के प्रति सम्मान की भावना कम थी। इसलिए उनके चारित्रिक पतन एवं मर्यादाहीनता की कहानियाँ इनके ग्रन्थ में प्राप्त होते हैं। सोमदेव ने कथासरित्सागर के रूप में एक महाकथासागर की रचना की है। वे विलक्षण व्यक्तित्व के

स्वामी थे। स्पष्ट रोचक और मन को मोह लेने वाली कहानी कहने की ऐसी अद्भूत शक्ति थी जिसे प्रत्येक कहानी में पिरोया है। प्रो. ए.वी. कीथ ने सोमदेव एवं कथासरित्सागर पर अपने विचार व्यक्त किए हैं – "सोमदेव एवं सुसंगठित ग्रन्थ की रचना करने में सिर्फ सफल ही नहीं हुए हैं वरन् कथासरित्सागर को उत्कर्ष पर पहुँचाया है जिसका आधार वस्तु की संघटना नहीं बल्कि उसका आधार दृढ़ वस्तुस्थिति है।" सोमदेव ने सरल एवं अकृत्रिम कथा को मनोविनोदकारी रूप से अनेक रूपों में प्रस्तुत किया है।

3.4 पञ्चतन्त्र

3.4.1 भूमिका

पञ्चतन्त्र संस्कृत नीति कथा साहित्य का अत्यन्त प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह विष्णुशर्मा के द्वारा रचित नीतिकथा है। कहा जाता है कि विष्णुशर्मा ने दक्षिण के महिलारोप्य नामक नगर के राजा अमरकीर्ति के मूर्खपुत्रों को विद्वान एवं नीतिज्ञ बनाने का कठोर प्रण किया था। विष्णुशर्मा ने छः महीने में नीतिपूर्ण एवं लोकव्यवहार से पूर्ण विभिन्न प्रकार के मनोरञ्जक कथाओं द्वारा अति अल्प समय में राजकुमारों को चतुर नीतिकुशल एवं लोकव्यवहार पटु बना दिया।

"कथाच्छलेन बालानां नीतिः तदिह कथ्यते।"

पञ्चतन्त्र में पशुपक्षियों एवं मनुष्यों को पात्र बनाकर रोचक कथाएँ कही गई हैं। इसकी सभी कहानियों में नैतिक शिक्षा दी गई है। पञ्चतन्त्र की कहानियों में उपदेश देने की अद्भुत कला है। आचार एवं व्यवहार सिखाना ही इन कथाओं का मुख्य उद्देश्य है। पञ्चतन्त्र गद्य-पद्यात्मक शैली में है। कथा गद्य में कही गई हैं तो नैतिक शिक्षा पद्य में।

3.4.2 समय

पञ्चतन्त्र अपने मूल रूप में प्राप्त नहीं होती है। परन्तु उसके विभिन्न अनुवाद एवं प्राचीनतम हस्तलिपियों के आधार पर इसके कई संस्करण प्राप्त होते हैं। पञ्चतन्त्र का प्रथम अनुवाद बादशाह खुशरु अनुशेरवाँ की

आज्ञा से 5वीं सदी में पहलवी भाषा में किया गया था। डॉ. एजर्टन एवं हर्टल ने पञ्चतन्त्र पर अनेकशः अनुसन्धान किए। उन्होंने इसका रचनाकाल 200 ई.पू. के बाद का माना है। पञ्चतन्त्र में चाणक्य के प्रति सम्मान प्रकट किया गया है -

"चाणक्याय च विदुषे नमोऽस्तु"

चाणक्य का समय चतुर्थ शताब्दी पूर्व का माना जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि पञ्चतन्त्र की रचना इसके बाद ही हुई होगी।

विंटरनित्स ने पंचतन्त्र के वर्तमान स्वरूप का निर्माणकाल 300-400 ई. के आसपास माना जाता है। साथ ही यह भी कहा है कि पञ्चतन्त्र का मूल रूप इससे भी पहले रचा गया होगा। पंचतन्त्र की कई वाचनाएँ हैं जिसमें सर्वप्रथम तन्त्राख्यायिका है जिसका रचनाकाल 300 ई. के आसपास माना गया है जो पञ्चतन्त्र को इससे पूर्व का सिद्ध करता है।

3.4.3 वाचनाएँ

पञ्चतन्त्र की निम्नलिखित वाचनाएँ प्राप्त होती हैं -

i) तन्त्राख्यायिका
ii) दक्षिण भारतीय पञ्चतन्त्र
iii) नेपाली पञ्चतन्त्र
iv) पहलवी पञ्चतन्त्र
v) पञ्चतन्त्र का हितोपदेशात्मक संस्करण
vi) पञ्चाख्यान (पूर्णभद्र का पञ्चतन्त्र)
vii) वृहत्कथामञ्जरी के अन्तर्गत पञ्चतन्त्र की कथा (उत्तर पश्चिमी पञ्चतन्त्र)
viii) सरल पञ्चतन्त्र

तन्त्राख्यायिका - पञ्चतन्त्र की सभी वाचनाओं में यह सर्वाधिक प्रामाणिक हैं। डॉ. हर्टन ने 1910 में इस संस्करण को प्रकाशित किया। इसका रचनाकाल 300 ई. के आसपास मानी जाती है। राजनीति की शिक्षा प्रदान करना इसका उद्देश्य है इसलिए इसमें राजशास्त्र के प्राचीन ग्रन्थों के गद्य-पद्य के लम्बे उद्धरण मिलते हैं। इसकी दो प्रतियाँ

शारदा लिपि में कश्मीर से प्राप्त हुई है।

दक्षिण भारतीय पञ्चतन्त्र - यह दक्षिणात्य पाठ है। यह तमिल भाषा में रचित पञ्चतन्त्र है। एजर्टन के अनुसार इस संस्करण में मूल ग्रन्थ के तीन चौथाई गद्य भाग एवं दो-तिहाई पद्य भाग सुरक्षित है।

नेपाली पञ्चतन्त्र - इस वाचना की पाण्डुलिपि 1484 में प्राप्त हुई। पञ्चतन्त्र की इस नेपाली वाचना के तीन स्वरूप प्राप्त होते हैं - केवल पद्यात्मक, गद्य-पद्यात्मक एवं नेवारी भाषा की कहानियों के साथ संस्कृत पद्य का संस्करण।

पहलवी संस्करण - पञ्चतन्त्र का पहलवी भाषा में खुसरो अनुशेरवाँ के शासनकाल में हकीम बुर्जोई ने किया था। परन्तु अब यह नष्ट हो चुका है।

हितोपदेशात्मक संस्करण - पञ्चतन्त्र का अति संक्षिप्त एवं लोकप्रिय संस्करण है जिसे नारायण पण्डित ने लिखा था।

पञ्चाख्यान - पूर्णभद्र नामक जैन साधु ने 1199 ई. में इस ग्रन्थ की रचना की। पूर्व वाचना से अधिक परिष्कृत होने के कारण इसे अलंकृत वाचना कहा जाता है।

बृहत्कथामञ्जरी के अन्तर्गत पञ्चतन्त्र की कथा - पञ्चतन्त्र की कुछ कथाएँ बृहत्कथा मञ्जरी में प्राप्त होती है। माना जाता है कि क्षेमेन्द्र ने तन्त्राख्यायिका से यह कथा ली होगी।

सरल पञ्चतन्त्र - इस पञ्चतन्त्र का सम्पादन जैन विद्वान ने किया था। बाद में व्यूलर एवं कीलहार्न ने इसका सम्पादन करके पुनः प्रकाशित किया था। यह इस समय मूल ग्रन्थ के रूप में सर्वाधिक प्रचलित है।

डॉ. एजर्टन ने सभी वाचनाओं के सूक्ष्म अध्ययन के उपरान्त पञ्चतन्त्र का एक पुनर्निमित संस्करण प्रस्तुत किया।

3.4.4 कथासार

पञ्चतन्त्र के पाँच तन्त्र प्राप्त होते हैं। तन्त्र शब्द इस ग्रन्थ के पाँच भागों में विभाजित होने के द्योतक है। इसमें नीतियुक्त शासन विधि के पाँच

विधि (गुर) बताए गए हैं। ग्रन्थ के आरम्भ में मंगलाचरण के उपरान्त मनु, वाचस्पति, शुक्र, पाराशर, व्यास, चाणक्य की स्तुति की गई है।

पञ्चतन्त्र के पाँचों तन्त्रों में मुख्य कथा एक-एक है किन्तु उस मुख्य कथा को निष्कर्ष तक पहुँचाने के लिए बीच-बीच में अनेक गौण कथाएँ आई हैं। पञ्चतन्त्र के पाँचों तन्त्रों का नाम इस प्रकार है – मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश, अपरीक्षित कारक।

मित्रभेद - इस तन्त्र में दो मित्रों के बीच फूट डालने की कथा है। इसमें पिंगल नामक सिंह तथा सञ्जीवक नामक वृषभ (बैल) के बीच जो परस्पर मैत्रीभाव है उसको दमनक एवं करतक नामक दो सियार फूट डाल देते हैं। इस तन्त्र की यही मुख्य नीतिकथा है जिसे 22 अन्य गौण कथाओं के द्वारा पुष्ट किया जाता है। ये कथाएँ निम्न हैं - पिङ्गलक-सञ्जीवक कथा, कीलोत्पाटी वानर की कथा, श्रृंगार-दुन्दुभिकथा, दन्तिल गौरम्भ कथा, आषाढ़भूति प्रभूति कथा, तन्तुवाय एवं राजकुमारी की कथा, वायसदम्पति एवं कृष्णसर्प कथा, तीन मछलियों की कथा, पक्षी एवं वानर की कथा, गौरैया एवं वानर की कथा, धर्मबुद्धि और पापबुद्धि कथा, कृष्णसर्प एवं नकुलकथा राजा एवं सेवक वानर कथा, वक-कर्कट कथा, सिंह-शशक कथा, मन्दविसर्पिणी अग्निमुख कथा, नीलवर्ण श्रृगाल कथा, टिट्टिभ समुद्र कथा, कम्बुग्रीव-कच्छप कथा।

मित्रसम्प्राप्ति - इस तन्त्र में जीवन में मित्र की उपयोगिता रूपी शिक्षा प्रदान की गई है। इस तन्त्र में चित्रग्रीव नामक कपोत, हिरण्यक नामक मूषिक, लघुपतनक नामक काक, चित्राङ्ग नामक हरिण तथा मन्थरकनामक कच्छप की कथा मुख्य रूप से कही गई है। इसके अतिरिक्त छः अन्य गौण कथाएँ भी हैं। परिव्राजक मूषिक कथा, शाण्डिली द्वार तिलविक्रय की कथा, शूकर-श्रृगाल कथा, व्यापारी पुत्र कथा, सोमिलक जुलाहे की कथा, बल का अनुसरण करने वाले श्रृगाल की कथा

काकोलूकीय - इस तन्त्र में काक एवं उलूक के जन्मजात वैरभाव के दृष्टान्त के माध्यम से युद्ध एवं सन्धि के सिद्धान्त साम, दाम, दण्ड एवं भेद के समुचित प्रयोग की राजनीतिक शिक्षा प्राप्त होती है। अन्य 17 कथाएँ इस बात को पुष्ट करती है। खरगोश हाथी कथा, गोरैया-खरगोश

कथा, मार्जार कथा, चुहिया को युवती रूप प्रदान करने की कथा, वृद्ध-वणिक् कथा, भेकवाहन सर्पकथा, ब्राह्मण एवं तीन धूर्तों की कथा, कृष्णसर्प एवं चींटी की कथा, ब्राह्मण एवं सर्प की कथा, कपोत एवं व्याघ्र की कथा, इत्यादि।

लब्धप्रणाश - विकट परिस्थिति में अपनी बुद्धि का सही उपयोग कर किस प्रकार हम संकट से बच सकते हैं यह शिक्षा लब्धप्रणाश नामक तन्त्र प्रदान करती है। रक्तमुख नामक वानर एवं कराल मुख नामक मगर की कथा मुख्य कथा है। इसके अतिरिक्त 11 अन्य कथाएँ भी हैं। भेकराज कृष्णसर्प कथा, सिंह एवं श्रृगाल की कथा, कुम्हार एवं राजा की कथा, सिंहशावक एवं श्रृगालशावक की कथा, ब्राह्मणी एवं लंगड़े की कथा, गधे एवं धोबी की कथा, कुत्ते की कथा, महाराज नन्द एवं मन्त्री वररुचि की कथा, कृषकपत्नी ठग और श्रृगाली कथा इत्यादि।

अपरीक्षितकारक - बिना सोचे समझे कोई कार्य नहीं करना चाहिए। यह नीतिगत शिक्षा हमें इस तन्त्र से प्राप्त होती है। इसकी मुख्य कथा मणिभद्र नामक श्रेष्ठी एवं नापित की कथा है। इसमें 14 अन्य गौण कथाएँ हैं। इस तन्त्र में ज्यादातर पात्र मनुष्य ही हैं। अन्य गौण कथाएँ - ब्राह्मणी एवं नेवले की कथा, चक्रधर कथा, अलौकिक पण्डितों की कथा, शतबुद्धि एवं सहस्रबुद्धि कथा, संगीतज्ञ गधे एवं सियार की कथा, मन्थर जुलाहे की कथा, सोमशर्मा के पिता की कथा, चन्द्रनृपति एवं वानरदल कथा, भारुण्ड पक्षी की कथा, त्रिस्तनीराजकुमारी की कथा, विकरालवानर एवं राक्षस की कथा इत्यादि। पञ्चतन्त्र के पाँच तन्त्रों में से प्रथम तीन तन्त्र में राजनीतिक विषयक दाँव-पेंच, घात-प्रतिघात आदि पर नीतिशत शिक्षा प्रदान की गई है। अन्य दो तन्त्रों में व्यक्ति के पञ्चतन्त्र की मुख्य विशेषता यह है कि कथा से मिलने वाली शिक्षा पद्य में प्रदान की गई है एवं उसी पद्य में आगे आने वाली कथा की सूचना प्रदान की गई है -

अपि शास्त्रेषु कुशला लोकाचार विवर्जिताः।
सर्वे ते हास्यतां यान्ति यथा ते मूर्खपण्डिताः।।

पञ्चतन्त्र का भाषाशैली सरल एवं मुहावरेदार है। वस्तुतः यह अल्पबुद्धि राजकुमारों को शिक्षा प्रदान करने के लिए रची गई थी इसलिए अर्थ

समझने में लेशमात्र भी कठिनाई नहीं होती। कवि ने रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा, अनुप्रासादि सरल अलंकारों का प्रयोग किया गया है -

भोगिनः कञ्चुकाविष्टाः कुटिलाः क्रूरचेष्टिताः।
सुदुष्टा मन्त्रसाध्याश्च राजानः पन्नगा इव।।

पञ्चतन्त्र की कथाओं का विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार हुआ। अमीर खुसरो ने इसे पृथ्वी पर उतरा हुआ स्वर्ग कहा है। अपनी लोकप्रियता, नैतिकता, सरलता के कारण पञ्चतन्त्र न केवल भारतीय साहित्य का अङ्ग बल्कि विश्वसाहित्य का महत्त्वपूर्ण अङ्ग है।

3.5 हितोपदेश

3.5.1 भूमिका

पञ्चतन्त्र पर आधारित नीतिकथाओं में हितोपदेश सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं प्रचलित ग्रन्थ है। हितोपदेश की रचना नारायण पण्डित ने की है। नारायण पण्डित बंगाल के राजा धवलचन्द्र के दरबार में थे। हितोपदेश में पञ्चतन्त्र के अतिरिक्त अन्य कई स्रोतों से कहानियों का चयन कर संग्रह किया गया है। आज इसके कई संस्करण प्राप्त होते हैं -

"पञ्चतंत्रात्तथाऽन्यस्माद् ग्रन्थादाकृष्य लिख्यते।"

3.5.2 समय

हितोपदेश की प्राचीनतम पाण्डुलिपि 1373 ई. में प्राप्त हुई है। डॉ. कीथ मानते हैं कि हितोपदेश की रचना 11वीं शताब्दी के पहले की है या आस-पास की है क्योंकि हितोपदेश में रुद्रभट्ट का एक पद्य उद्धृत है। रुद्रभट्ट का समय 11वीं शताब्दी का माना जाता है। फ्लीट ने हितोपदेश में प्रयुक्त 'भट्टारकवार' जो रविवार के लिए प्रयोग हुआ है इसका प्रयोग 900 ई. के पूर्व नहीं है इसलिए इसका समय 10वीं-11वीं शताब्दी माना है। परन्तु इसकी पाण्डुलिपि के 1373 में प्राप्त होने के कारण ज्यादा विद्वान इसका समय चौदहवीं शताब्दी के पूर्व की रचना मानते हैं।

3.5.3 कथासार

हितोपदेश में चार भेद हैं - मित्रलाभ, मित्रभेद, विग्रह एवं सन्धि। इसमें 39 कथाएँ और प्रत्येक भाग की एक मुख्य कथा भी है। इस प्रकार 43

कथाएँ हो जाती हैं। इसमें पद्यों की संख्या 726 है। यह भी पञ्चतन्त्र की तरह ही गद्य-पद्यात्मक है। कथा गद्य में एवं उपदेश पद्य में हैं।

मित्रलाभ - मित्रलाभ में काक-कूर्म-मृग-मूषिक की कथा है। इसमें कपोतराज चित्रग्रीव की कथा है। एक दिन लघुपतनक नामक कौवे ने बहेलिये को जाल बिछाते हुए देखा। उसमें कपोतराज चित्रग्रीव और सभी कबूतर फँस गए। सभी कबूतर उस जाल को लेकर उड़ गए एवं लघुपतनक नाम चूहे के पास गए जो कि उनका मित्र था। उसने जाल को काट दिया। वहीं लघुपतनक की मित्रता चूहे के मित्र कछुए से हुई। बाद में एक हिरण भी उनका मित्र बन गया। एक दिन हिरण जाल में फँस गया। उसे भी इन मित्रों ने चालाकी से छुड़ा लिया। एक बार एक शिकारी ने कछुए को भी पकड़ लिया जिसे हिरण ने छुड़ा लिया। इन कहानियों के माध्यम से मित्रता के महत्त्व को समझाया गया है।

इसके अतिरिक्त वृद्धव्याघ्र एवं लोभी ब्राह्मण की कथा, दीर्घकर्णनामक विडाल की कथा, चूडाकर्ण नामक परिव्राजक की कथा, चन्दनदास नामक वणिक की कथा भैरव नामक व्याध की कथा, वीरसेन नामक राजा की कथा एवं कर्पूरतिलक नामक हाथी की कथा।

मित्रभेद - इसमें मुख्य कथा - एक दुष्ट सियार द्वारा पिंगल नामक सिंह के साथ संजीवक नामक वृषभ के मध्य शत्रुता कराने का वर्णन है जिसे सिंह ने विपत्ति से बचाया था अपने मंत्री दमनक एवं करटक के विरोध करने के बावजूद उसे अपना मित्र बनाया था। इसके अतिरिक्त रजक कथा, काकदम्पती एवं कृष्णसर्प की कथा, टिटहरी के जोड़े तथा समुद्र की कथा, कन्दर्पकेतु नामक संन्यासी ग्वाला एवं उसकी व्याभिचारिणी स्त्री की कथा इत्यादि।

विग्रह - तीसरे भाग में युद्ध एवं सन्धि का वर्णन है। हंसों एवं मयूरों के मध्य युद्ध की कथा है। इसके माध्यम से विष्णुशर्मा ने यह शिक्षा दी है कि बिना युद्ध किए भी शत्रु पर विजय प्राप्त की जा सकती है। इसमें निम्नलिखित अन्य कथाएँ हैं - पक्षी एवं बन्दरों की कथा, बाघ का खाल ओढ़ कर खेत चरने वाले गदहे की कथा, नील में रंगे सियार की कथा, चूड़ामणि नामक क्षत्रिय नापित एवं भिक्षुक की कथा, हंस कौआ एवं पथिक की कथा, कौआ पथिक एवं ग्वाले की कथा इत्यादि।

सन्धि - इस भाग में हंसों और मयूरों के मध्य गीध एवं चकवे के द्वारा मैत्री कराने की मुख्य कथा है। इसके अतिरिक्त अनागत-विधाता, प्रत्युत्पन्नमति तथा यद्भविष्य नामक मत्स्यों की कथा, बगुले साँप एवं नेवले की कथा, महातपा नामक मुनि एवं चूहे की कथा, वृद्धबक, कर्कट एवं मत्स्य की कथा, देवशर्मा नामक ब्राह्मण एवं कुम्हार की कथा, मन्दविष नामक सर्प एवं मेंढ़कों की कथा, ब्राह्मण एवं उसके द्वारा पालित नेवले की कथा इत्यादि। नारायण पंडित ने कथाओं का गुंथन इस प्रकार किया है कि वह मनोरञ्जक होने के साथ-साथ उपदेशात्मक भी है-

माताशत्रुःपितावैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

ऐसे ही कई अन्य उपदेशात्मक श्लोक हैं -

पयः पायं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम्।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये।।

अर्थात् साँप को दूध पिलाना उसके विष को बढ़ाना है, उसी प्रकार मूर्खों को उपदेश देना उसकी मूर्खता को बढ़ाना है। इसके द्वारा स्वभाव ही सबसे बढ़कर होता है, यह बताया गया है।

इस ग्रन्थ में मूर्खों की निन्दा की गई है -

"काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खानां निद्रया कलहेन वा।।"

अर्थात् मूर्खों का समय जुआ, परनिन्दा, मद्यपान, अतिनिद्रा एवं कलह में बीतता है परन्तु बुद्धिमानों का समय काव्य एवं शास्त्रों के पठन-पाठन में।

इस प्रकार शिक्षापरक गन्थ होने के कारण इसकी भाषाशैली अत्यन्त ही सरल है। संस्कृत सीखने वाले प्रारम्भिक स्तर के छात्रों के लिए इस पुस्तक का पाठ्यक्रम के रूप में प्रयोग किया जाता है।

इनके श्लोकों का प्रयोग हम यदा-कदा उद्धरण की तरह प्रयोग करते हैं। नारायण पंडित ने विद्या को मानव के लिए चक्षु सदृश माना है। यह ग्रन्थ नाम के सदृश ही लोकहित की कामना से रची गई है। अतः इनमें

उन पक्षों पर विशेष प्रकाश डाला गया है जो मानव-जीवन को सार्थक बनाती है। भाग्य एवं परिश्रम दोनों का जीवन में समान महत्त्व है। हमें अपना कर्म करना चाहिए, कभी सफलता प्राप्त न भी हो तो इसे भावित समझ कर आगे अग्रसर होना चाहिए। यह ग्रन्थ व्यक्ति के मन में आशा एवं विश्वास उत्पन्न करने का काम करती है। इस प्रकार हितोपदेश को आत्मसात् करने वाला व्यक्ति कभी भी निराशा, तिरस्कार को प्राप्त नहीं करता, उसकी विद्वानों के मध्य सम्मान प्राप्त होता है -

हितोपदेशे विख्याता नारायणकवेर्विभा।
प्रथते नीतिबोधाय बालविज्ञमनोरमा।।

3.6 चाणक्यनीति

3.6.1 भूमिका

आदर्श चरित्र एवं स्वच्छ आचरण का विशेष रूप से ज्ञान देने वाला साहित्य नीतिशास्त्र भारतीय साहित्य का एक मुख्य अङ्ग है। नीतिपरक ग्रन्थों में शान्तिपूर्ण जीवन जीने की कला का उपदेश बहुत ही सरल एवं सुबोध शैली में दी गई है जो छोटे-छोटे पदों में उपनिबद्ध होने से अत्यन्त ही हृदयग्राही है। महाभारत-रामायण आदि ग्रन्थों में भी इस प्रकार के वचन प्राप्त होते हैं, जिसमें विदुर नीति महत्त्वपूर्ण है। पुराणादि ग्रन्थों में भी नीतिवचन प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त स्वतन्त्र रूप से भी नीतिशास्त्रीय ग्रन्थों की रचना की गई है। डॉ. लुडविक स्टर्नवाला का मानना है कि नीतिशास्त्रीय ग्रन्थों की रचना भारतीय मनीषियों ने मानवीय दुर्बलताओं को जानते हुए भी कि वे किस प्रकार विकट परिस्थितियों में अपना धैर्य खो देते हैं; ऐसी परिस्थिति में किस प्रकार बिना धैर्य खोए परिस्थितियों का सामना करना चाहिए को ध्यान में रखकर इस प्रकार के ग्रन्थों की रचना की है। ऐसे ग्रन्थों में न केवल हितकर एवं सुन्दर विवेकपूर्ण वचन होते हैं अपितु कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, करणीय-अकरणीय उपदेश भी हास्य-विनोदपूर्ण प्रसङ्गों के माध्यम से प्रदान करते हैं। यद्यपि लोक-जीवन में विद्यमान इन नीति वचनों के मूल रचयिता का नाम स्पष्ट रूप से प्राप्त नहीं होता, फिर भी कुछ नाम बड़े ही आदर से लिए जाते हैं, जिसमें चाणक्य का नाम सर्वोपरि है। नीतिशास्त्र के सबसे प्राचीन एवं स्वतन्त्र ग्रन्थ 'चाणक्यनीतिदर्पण' है।

हजारों वर्षों से सांसारिक ज्ञान एवं दूरदृष्टि के लिए चाणक्य नीति विख्यात है। इस ग्रन्थ के रचनाकार अमात्य चाणक्य हैं। यद्यपि चाणक्यदर्पण में मनुस्मृति, महाभारत, मार्कण्डेय पुराणादि के पद्य भी प्राप्त होते हैं। राजनीतिवेत्ता कालजयी चाणक्य को सम्मान देते हुए चाणक्य को ही इसका रचनाकार माना जाता है। चाणक्य संस्कृत साहित्य में अपने गुण, राजनीति में कुशलता, आचार-विचार मर्मज्ञ कूटनीतिज्ञाता माने जाते हैं। चाणक्य का सम्बन्ध मौर्यवंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ है। इनका वास्तविक नाम विष्णुगुप्त था और अपनी कुशग्रबुद्धि के कारण चाणक्य नाम से प्रसिद्ध हो गए, ऐसा माना जाता है।

3.6.2 समय

चाणक्य का समय ईसा पूर्व 371 से ईसा पूर्व 283 के मध्य माना जाता है। सम्भवतः ग्रन्थ की रचना भी इसी कालखण्ड में हुई होगी। चन्द्रगुप्त मौर्य के महामंत्री होने से यह समय सीमा सही ही प्रतीत होती है।

3.6.3 वाचनाएँ

डॉ. लुडविक स्टर्नवाख ने अनेक ग्रन्थों एवं शोध निबन्धों के आधार पर चाणक्य की नीतिदर्पण ग्रन्थ की छः वाचनाएँ एकत्रित कर सम्पादित एवं प्रकाशित की - वृद्धचाणक्य, वृद्धचाणक्य, चाणक्यनीति शास्त्र, चाणक्य सार-संग्रह, लघु चाणक्य, चाणक्य राजनीतिशास्त्र।

वृद्धचाणक्य - वृद्ध चाणक्य नाम से दो वाचनाएँ प्राप्त होती हैं। इसमें प्रथम को सामान्य वाचना एवं द्वितीय को अलंकृत वाचना के नाम से जाना जाता है। प्रथम वाचना में 8 अध्याय एवं द्वितीय वाचना में 17 अध्याय हैं। द्वितीय वाचना का ही नाम चाणक्यनीति दर्पण है। इसके प्राप्त 336 नीतिपद्यों में से 117 पद्य केवल इसी वाचना में प्राप्त होते हैं। अवशिष्ट पद्य अन्य वाचनाओं में भी प्राप्त होते हैं। यह चाणक्य द्वारा रचित वास्तविक ग्रन्थ है।

चाणक्यनीतिशास्त्र - यह तीसरी वाचना है। इसमें विविध शास्त्रों में उद्धृत राजनीति का समुच्चय एवं सभी शास्त्रों का सार है।

"नानाशास्त्रोद्दतं वक्ष्ये राजनीति समुच्चयम्।
सर्वबीजमिदं शास्त्रं चाणक्यसारसङ्ग्रहम्।।
मूलसूत्रं प्रवक्ष्यामि चाणक्येन यथोदितम्।
यस्य विज्ञानमात्रेण मूर्खो भवति पण्डितः।।

कुछ लोग इस वाचना को ही मूल वाचना मानते हैं। इसमें अनुष्टुप् छन्द में रचे 108 पद्य हैं।

चाणक्यसारसंग्रह - यह चतुर्थ वाचना है। इसमें 300 श्लोक हैं, जो अनुष्टुप् छन्द में रचे हैं। इस ग्रन्थ में शुभ-अशुभ, कार्य-अकार्य, धर्म उपदेश, विनयादि का ज्ञान होता है। इसमें राजनीति के साथ-साथ लोकनीति की भी शिक्षा दी गई है। इसमें उद्धृत एक श्लोक के आधार पर इसके प्रणेता किसी काशीवासी को मानते हैं -

अपारे खलुसंसारे सारमेतच्चतुष्ट्यम्।
कास्यां वासः सतां सङ्गो गङ्गाभ्यः शम्भुपूजनम्।।

लघुचाणक्य - यह पञ्चम वाचना है। इसमें आठ अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में 10 से 13 श्लोक हैं। यह वाचना भारत में प्रचलित नहीं है। इसका प्रकाशन यूनानी विद्वान गेलेनास ने यूनानी भाषा में 1885 ई. में प्रकाशित किया।

चाणक्य राजनीतिशास्त्र - यह छठी वाचना है और यह भी भारत में प्रसिद्ध नहीं है। यह मूलतः तिब्बती तंजूर में था, जिससे संस्कृत अनुवाद किया गया। इसमें आठ अध्याय एवं 534 श्लोक हैं।

इस प्रकार चाणक्यनीति भारतीय साहित्य का एक विशिष्ट ग्रन्थ है। इसका सिर्फ भारत में ही नहीं वरन् विश्व के कई देशों में इसका प्रचार-प्रसार है।

3.6.4 कथासार

चाणक्य नीतिदर्पण नामक ग्रन्थ 17 अध्यायों में विभक्त है -

प्रथम अध्याय - इसमें 17 अध्याय हैं जिसमें शास्त्रों का ज्ञान, शुभ-अशुभ कार्यों का ज्ञान, उपदेश की महत्ता, सही-गलत कार्यों में से एक का चयन करना इत्यादि महत्त्वपूर्ण विषय पर नीतिगत ज्ञान दिया गया है।

द्वितीय अध्याय - इसमें 20 श्लोक हैं। इसमें सही मित्र का चयन, स्त्रियों के गुण-दोष, दुष्ट से मित्रता के दुष्परिणाम, स्वजनों का नियोग आदि मुख्य विषय वर्णित हैं।

तीसरा अध्याय - इसमें 21 श्लोक हैं। इसमें विद्या एवं उद्यम का महत्त्व, आत्मरक्षा, प्रिय वचन का महत्त्व, सच्चा मित्र कौन होता है, सागर एवं सज्जन (साधु) की समता, सत्पुत्र का महत्त्व तथा मित्रता इत्यादि विषय वर्णित हैं।

चतुर्थ अध्याय - इस अध्याय में 21 श्लोक हैं। इसमें विद्या, धर्म, दुख, बांझ स्त्री हृदय की शून्यता, मृत एवं मूर्ख पुत्र में अन्तर, माता एवं पिता का माहात्म्य इत्यादि वर्णित हैं।

पञ्चम अध्याय - इसमें 21 श्लोक हैं। सुवर्ण एवं सत्पुरुष परीक्षण, भय आने पर भी यथोचित आचरण, शुभाशुभ कर्म प्रभाव, धूर्तों का वर्णन, अभ्यास के लाभ आदि कई विषय वर्णित हैं।

षष्ठ अध्याय - इसमें भी 21 श्लोक हैं। इसमें धर्मशास्त्र सुनने के लाभ, नारी, नदी एवं धातु परीक्षण, काल का माहात्म्य, कर्मफल का भोग, शिक्षा का महत्त्व आदि विषय वर्णित हैं।

सप्तम अध्याय - इसमें भी 21 श्लोक हैं। इस अध्याय में लज्जा छोड़ने का महत्त्व, सन्तोष की महत्ता, विद्या का महत्त्व, शुचिता के प्रकार, हंस एवं मनुष्य की समानता, इत्यादि ऐसे कई विषय हैं, जिसका वर्णन किया गया है।

अष्टम अध्याय - इसमें 22 श्लोक हैं। भोजन में जल का महत्त्व, मूर्तिपूजा का महत्त्व, तप का विधान, जल, नारी, ब्राह्मण, राजा में शुचिता, विद्या की महत्ता, अन्न के समान सन्तान की तुलना आदि विषय वर्णित हैं।

नवम अध्याय - इसमें 14 श्लोक हैं। इसमें मुक्ति की इच्छा से विषयों का त्याग, परिश्रम से प्राप्त वस्तु की महत्ता, स्वर्ग की प्रधानता का विधान का महत्त्व बताया गया है।

दशम अध्याय - इस अध्याय में 20 श्लोक हैं। इसमें विद्या की प्रशंसा, विद्या प्राप्त करने के लिए आलस्य का त्याग, विद्या की सर्वश्रेष्ठता,

प्रज्ञा की महत्ता, धनविहीन व्यक्ति की अमहत्ता इत्यादि विषय वर्णित हैं।

एकादश अध्याय - इसमें 18 श्लोक हैं। इसमें ब्राह्मण के लक्षण, मनुष्य के स्वाभाविक गुण, विद्यार्थियों के लिए त्याज्य वस्तु आदि विषय वर्णित हैं।

द्वादश अध्याय - इस अध्याय में 22 श्लोक हैं। इसमें गृहस्थ जीवन की महत्ता, दान की महत्ता, सत्सङ्गति की महत्ता, लोकव्यवहार परायणता, शरीर की विशेषता आदि विषय वर्णित हैं।

त्रयोदश अध्याय - इसमें 19 श्लोक हैं। इसमें जीवन में अच्छे कर्मों की महत्ता, वर्त्तमान में जीने का महत्त्व, भूतकाल पर शोक नहीं मनाना, स्नेह ही दुख का कारण है, मन ही बन्धन एवं मोक्ष का कारण है। गुरु की महिमा आदि विषय वर्णित हैं।

चतुर्दश अध्याय - इसमें 20 श्लोक हैं। इसमें दुर्जन संगति का त्याग एवं सत्संगति के लाभ, अप्रिय के साथ भी प्रिय व्यवहार करना, धर्महीन जीवन की निष्प्रयोजनता आदि विषय वर्णित हैं।

पञ्चदश अध्याय - इसमें 18 अध्याय हैं। इसमें प्राणियों पर दया भावना, मणि एवं कञ्चन में अन्तर, विवेक के साथ गुण का भी महत्त्व, प्रिय वचन से सबको सन्तुष्ट रखना, अतिथि सत्कार का महत्त्व इत्यादि विषय वर्णित हैं।

षोडश अध्याय - इसमें 19 अध्याय हैं। इसमें धर्म, अर्थ एवं गृहस्थ जीवन के अनुरूप काम का भोग करना। परोपकार से समस्त विपत्ति की शान्ति, आहार-निद्रा-भय-मैथुन सभी में समान होते हुए भी मनुष्य में विवेक की महत्ता आदि विषय वर्णित हैं।

सप्तदश अध्याय - इस अध्याय में 20 श्लोक हैं। इसमें गुरु से पढ़ने का महत्त्व, लोभादि से मुक्त होना, सभी दोषों से मुक्त होना, दुर्जन की तुलना विष से करना, परोपकार से समस्त विपत्ति से मुक्ति, माता की महानता, दान का सौन्दर्य वर्णन इत्यादि विषय वर्णित हैं।

बोध/अभ्यास प्रश्न-

1. बृहत्कथाकार कौन हैं?

   (क) गुणाढ्य (ख) श्रीधराचार्य (ग) कालिदास (घ) वामन

2. चाणक्यनीति किसकी रचना है?

   (क) भास (ख) चाणक्य (ग) गुणाढ्य (घ) सोमदेव

3. कथासरित्सागर का आधार ग्रन्थ कौन है?

   (क) कादम्बरी (ख) शुकसप्तति (ग) नीतिकाव्य (घ) बृहत्कथा

4. सोमदेव की रचना का नाम बताएँ -

   (क) बृहत्कथा मञ्जरी (ख) शुकसप्तति

   (ग) कथासरित्सागर (घ) नीतिशतक

5. चाणक्यनीति में कितने अध्याय हैं?

   (क) 12 (ख) 13 (ग) 17 (घ) 18

6. किस वाचना को चाणक्यनीति का आधार माना गया है?

   (क) वृद्धचाणक्य (ख) चाणक्यनीतिशास्त्र

   (ग) चाणक्यसार संग्रह (घ) लघुचाणक्य

7. पञ्चतन्त्र में कितने भाग हैं?

   (क) चार (ख) पाँच (ग) तीन (घ) दो

8. अपरीक्षित कारक किसका भाग है?

   (क) हितोपदेश (ख) पञ्चतन्त्र (ग) शुकसप्तति (घ) बृहत्कथा

9. सुहृद्भेद किस ग्रन्थ का भाग है?

   (क) हितोपदेश (ख) कथासरित्सागर

   (ग) नीतिदर्शन (घ) पञ्चतन्त्र

10. हितोपदेश में कितने भाग हैं?

    (क) एक (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच

11. तन्त्र में कौन सा ग्रन्थ विभाजित है?

    (क) पञ्चतन्त्र (ख) हितोपदेश (ग) नीतिशास्त्र (घ) कथासरित्सागर

12. काकोलूकीय किस ग्रन्थ का भाग है?

(क) पञ्चतन्त्र (ख) हितोपदेश

(ग) बृहत्कथामञ्जरी (घ) कादम्बरी

13. हितोपदेश का लेखक कौन है?

(क) नारायण पण्डित (ख) क्षेमेन्द्र

(ग) सोमदेव (घ) वामन

14. बृहत्कथा की किस वाचना का नाम कथासरित्सागर है?

(क) नेपाली (ख) कश्मीरी (ग) प्राकृत (घ) पाश्चात्य

15. चाणक्य किसके दरबार में अमात्य थे?

(क) चन्द्रगुप्त (ख) चाणक्य (ग) मुद्राराक्षस (घ) रुद्रदामन

3.7 सारांश

कथासाहित्य का मानवजीवन से अभिन्न सम्बन्ध है। इसका सम्बन्ध काव्य, नाटक, इतिहास, पुराण आदि साहित्य से प्राचीन है। इन कथाओं के माध्यम से विकसित-अविकसित, शिक्षित-अशिक्षित अपने विचारों का आदान-प्रदान करते रहे हैं। कथा के माध्यम से मनोरञ्जन, शिक्षा प्राप्त करना हमारा उद्देश्य रहा है। कथा साहित्य की दृष्टि से भारत संसार में अग्रणी है। कथा-साहित्य अपनी रोचकता एवं विभिन्न विशिष्ट गुणों के कारण धीरे-धीरे सम्पूर्ण विश्व में फैल गयी। पाश्चात्य लेखकों ने भारतीय कथाओं से प्रेरणा ले अपनी भाषाओं में कथाओं की रचना की। पञ्चतन्त्र, हितोपदेश, कथासरित्सागर आदि कहानियाँ इतनी प्रौढ़ मनोरञ्जक एवं शिक्षाप्रद है कि इसका प्रभाव बाद में रचे गए ग्रन्थों पर स्पष्ट दिखाई देता है। प्राचीन भारतीय जनमानस पर गुणाढ्य की बृहत्कथा का अमिट प्रभाव था। कालिदास, बाण, सुबन्धु, दण्डी आदि ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की थी वह आज लुप्त हो चुका है, परन्तु उसकी प्रतिकृति सोमदेव के कथासरित्सागर में आज भी सुनी जा सकती है। यह इस ग्रन्थ की महत्ता को स्वयमेव सिद्ध करती है। चाणक्य नीति भारतीय साहित्य का एक विशिष्ट रत्न है जिसका प्रचार मानवजीवन में सुधार लाने के लिए तथा राजाओं को नीति शिक्षा प्रदान करने के लिए सिर्फ भारत में ही नहीं इसका प्रचार-प्रसार व्यापक विश्व में दीर्घकाल से

होता रहा है। इस तरह कथा साहित्य और नीति साहित्य अल्पबुद्धि व्यक्ति के लिए शिक्षा प्राप्ति का अति उत्तम माध्यम बनकर आचार्यों के द्वारा हमारे सामने प्रस्तुत किया, उसके हम सर्वदा ऋणी रहेंगे।

3.8 शब्दावली

तन्त्र - भाग

वाचनाएँ - संस्करण (Recensious)

पैशाची - एक प्रकार की भाषा

गौडी - एक प्रकार की लेखनशैली, जो लम्बे समासयुक्त होते हैं

प्राकृत - एक प्रकार की भाषा

नीति शिक्षा - व्यवहारिक शिक्षा

उत्प्रेक्षा - एक प्रकार का अलंकार

गुंथन - एक-दूसरे से जुड़ा हुआ

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. उमा शंकर शर्मा ऋषि, चौखंबा भारती अकादमी, 2004
- संस्कृत साहित्य का इतिहास वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2009
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, कस्तूरबा नगर, सिगरा, वाराणसी 2001
- संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली, 2018
- संस्कृतरचना – श्री वामन शिवराम आप्टे - चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी

3.10 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1. गुणाढ्य
2. चाणक्य
3. वृहत्कथा

4. कथासरित्साग
5. 17
6. वृद्धचाणक्य
7. पाँच
8. पञ्चतन्त्र
9. हितोपदेश
10. चार
11. पञ्चतन्त्र
12. पञ्चतन्त्र
13. नारायण पण्डित
14. कश्मीरी
15. चन्द्रगुप्त

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY